तिथि	संख्या	तिथि	संख्या

छठा भाग

चिकित्सा-चन्द्रोदय

लेखक
बाबू हरिदास वैद्य

चिकित्सा-चन्द्रोदय

छठा भाग

लेखक—
बाबू हरिदास वैद्य

प्रकाशक—
हरिदास एण्ड कम्पनी

मुद्रक—
पं० यज्ञदत्त शर्मा,
प्रभाकर प्रेस, राजामण्डी, आगरा।

तीसरी बार १५०० | सन् १६३६ ई० | अजिल्द का मूल्य ३॥) सजिल्द का मूल्य ४।)

निवेदन

सन् १९२५ के जनवरी में चिकित्सा-चन्द्रोदय के छठे भाग का पहला संस्करण हुआ था, प्रूफ संशोधन की दिक्क़तों से बचने के लिये बहुत ज्यादा प्रतियाँ छपाली थीं, इससे पहला संस्करण सन् ३४ में खत्म हुआ। लेकिन दूसरा संस्करण सन् ३४ में ही छपा और तीसरा सन् ३६ में ही हो रहा है। यह आनन्द-कन्द श्रीकृष्णचन्द्र की असीम कृपा है जो मैं अपनी लिखी पुस्तकों के संस्करण-पर-संस्करण इन आँखों से देख रहा हूँ। यह ग्रन्थ जनता ने अति पसन्द किया, एक तरह से यह घर-घर की जरूरी चीज हो रहा है। आशा है जनता आगे भी इसकी ऐसे ही क़दरदानी करके मुझे आभारी बनायेगी। आशा तो नहीं है, पर शायद जगदीश इस ग्रन्थ के अगले संस्करण भी मेरे सामने करावे। अगर ऐसा हुआ तो मैं इस भाग में और भी वृद्धि करूँगा।

मथुरा
३१ मई, १९३६

निवेदक—
हरिदास

निवेदन।

आज इस वृहत्‌काय ग्रन्थका श्री गणेश हुए तीन या साढ़े तीन साल से अधिक नहीं हुए। जब हमने इसे आरम्भ किया था, तब आशा नहीं थी कि हमारे जैसे अल्पज्ञ, मन्दमति और आयुर्वेदसे कोरे लेखककी कृतिका भारतमें इतना आदर और प्रचार होगा; अटक से कटक और काश्मीरसे कन्याकुमारी तक इस ग्रन्थकी माँगोंका ताँता बँध जायगा; इतनी जल्दी हम इस ग्रन्थके नवीन संस्करण होते देख सकेंगे और देशके नामी-नामी विद्वान इसकी प्रशंसा करेंगे। असल बात यह है कि, जो अभिमान त्याग कर जगदीशके भरोसे पर काम करता है, उसे जगदीश अवश्य साहाय्य प्रदान करते हैं। जिस पर जगदीश की दया होती है, उसे सफलता होती ही है।

यद्यपि इस ग्रन्थमें हमारा अपना कुछ भी नहीं है, जो है सो पराया है। हम परायी पूँजीके बल खेल खेल रहे हैं; प्राचीन और अर्वाचीन विद्वानोंकी बड़ी मिहनत और खोजसे निकाली हुई अनमोल बातोंको उठा-उठाकर अपने ढँगसे सजा रहे हैं—यानी संग्रह कर रहे हैं; अतः हम संग्रहकार हैं और कुछ नहीं। चरक, सुश्रुत और वाग्भट्टके बाद जितने भी वैद्यक-ग्रन्थ लिखे गये हैं, वे प्रायः सभी संग्रह ग्रन्थ हैं। विद्वानोंने ऋषि-मुनियोंकी कही हुई अनमोल बातें

घटा-बढ़ाकर और अपने-अपने अनुभवकी पुट लगाकर अपने-अपने ग्रन्थोंमें रख दी हैं। हम भी उन्हीं विद्वानोंकी राहपर चले हैं। पर भेद इतना ही है, कि वे धुरन्धर विद्वान थे और हम उनकी तुलना में परले सिरेके अज्ञ और अनाड़ी हैं। वे आयुर्वेदके पारगामी थे और हमें आयुर्वेदके सिर-पैर की भी ख़बर नहीं; वे प्राणाचार्य और भिषक्‌चूड़ामणि थे और हम साधारण या निम्न श्रेणीके वैद्य भी नहीं। इतने पर हमारे जैसे क्षुद्रातिक्षुद्र लेखककी कृतिकी इतनी इज्ज़त और क़दर हो रही है और देशके हज़ारों सहृदय विद्वान् और साधारण लोग मुक्त कंठसे प्रशंसा कर रहे हैं, क्या यह कम आश्चर्य की बात है? मतलब यह कि, हम किसी योग्य नहीं। जो हो रहा है वह जगदीशकी कृपासे हो रहा है।

हमारा इरादा छठे और सातवें भागोंको गत सितम्बरमें ही निकाल देनेका था। इसीलिये पुस्तकें दो प्रेसोंमें दी गईं, पर बीच बीचमें हमें आधि-व्याधियोंने बहुत सताया। इससे कई बार काम रोक देना पड़ा। लेकिन जब देखा कि आफतें पीछा न छोड़ेंगी तब फिर काम जारी करना पड़ा और प्रूफ़ वगैरःका भार दूसरे लोगों पर छोड़ना पड़ा। हमने रोग-शय्यासे उठकर देखा, तो मालूम हुआ कि ग्रन्थ तो ठीक छप गये हैं; पर प्रूफ संशोधन-सम्बन्धी कुछ भूलें यत्र-तत्र रह गई हैं। उनमें से आधी भूलोंके लिये तो प्रूफ़रीडर अपराधी हैं, पर आधीसे अधिकके लिए वे अपराधी नहीं। वे भूलें छपते समय टाईप टूट जाने या उठ जानेसे हुई हैं। ऐसी भूलें प्रायः सभी पुस्तकोंमें होती रहती हैं। इस बीमारीकी दवा नहीं। अधिकांश भूलें संस्कृत श्लोकोंमें हुई हैं। पर उनसे पाठकोंकी उतनी हानि नहीं, इससे हमें दुःख होनेपर भी सन्तोष है। फिर भी, हम उनके लिये पाठकोंसे बारम्बार क्षमा प्रार्थना करते हैं। आशा है, सहृदय पाठक हमें क्षमा प्रदान करके अपनी उदारता का परिचय देंगे।

औषधियाँ तैयार करने, काढ़ा औटाने, चूर्ण बनाने, तेल और घी पकाने, अनेक तरहके विष-उपविष शोधने, चूर्ण वगैरःकी कितनी मात्रा सेवन कराने और किस समय सेवन कराने तथा अनुपान तजवीज करने के नियम वगैरः हम पहले के भागों में लिख आये हैं; लेकिन अनेक पाठकों के यह समझाने से, कि जो कोई सभी भाग न खरीदेगा, उसे ये नियम कैसे मालूम होंगे इत्यादि—हमने पुनरुक्ति दोषका विचार छोड़कर, इस छठे भाग के अन्तमें भी, चन्द जरूरी-जरूरी नियम क़ायदे लिख दिये हैं; पर बिल्कुल नये रूपमें। उनमें कितनी ही बातें ऐसी भी हैं जो पहले नहीं लिखी गईं अतः पाठक उन्हें ध्यानपूर्वक पढ़ें और समय पर दवाएँ तैयार करने में उनसे मदद लें।

कलकत्ता,
५ जनवरी, सन् १९२५ ई।

विनीत--
हरिदास।

छठा भाग।

पहला अध्याय।

——

——

चौथा अध्याय ।

पाँचवाँ अध्याय ।

आठवाँ अध्याय ।

❀ समाप्त ❀